यॉर्क (इंग्लैण्ड)
मार्च ०६, २००१

सन्देश संख्या ३३

लाहिड़ी महाशय अस्तित्व की एक अद्‌भुत घटना हैं

लाहिड़ी महाशय अस्तित्व एवं शाश्वतता की एक अद्भुत घटना हैं। दुर्भाग्य से, कुछ ओछी मानसिकता के लोगों द्वारा अपने लेखनों में उन्हें चमत्कारी अनुभवों से युक्त हस्ती के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

जिस प्रकार से शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए मल–त्याग किया जाता है, उसी प्रकार शून्यता और अस्तित्व के आनन्द हेतु अनुभवों से छुटकारा पाना पड़ता है (शून्येर साथे कोला–कुलि अर्थात् शून्य के साथ आलिंगन यानी लय) । उनके अनुभवों को अपनी व्याख्या देकर उसे चतुर्दिक फैलाने से उसी प्रकार मानसिक प्रदूषण फैल रहा है जिस प्रकार मल के आलोड़न–विलोड़न से दुर्गन्ध और गन्दगी फैलती है। लाहिड़ी महाशय द्वारा सिखायी गई क्रियायें इसलिए की जाती हैं कि आप ध्यान की ऊर्जा में स्थित हो सकें। ध्यान किया नहीं जाता, होता है। मन की कलाबाजी और उन्मत्तता ध्यान नहीं है। ध्यान का प्रयास करना ध्यान की प्रक्रिया से दूर जाना है। क्रियायोग से उत्पन्न समझदारी की ऊर्जा (लाहिड़ी घटना) सभी विखण्डनों का विध्वंस कर देती हैं जिसके अन्धकारपूर्ण छाये में अनुभव छिपे रहते हैं। लाहिड़ी महाशय मन के लय के उदाहरण हैं। वे, वस्तुतः, उन लोगों के लिए एक खतरे के समान हैं जो भ्रम एवं काल्पनिकताओं पर आधारित सतही जीवन जीना चाहते हैं।

लाहिड़ी–घटना का बोध समस्त कठिनाइयों का निराकरण करते हुए शरीर में एक समेकन, उद्‌घटन तथा रासायनिक परिवर्तन उत्पन्न करता है। यह पुनर्नवीकरण एवम् आत्मोन्मुखीकरण की एक क्रान्तिकारी प्रक्रिया है। तदुपरान्त, सौन्दर्य और मंगलमयता प्रस्फुटित होती है। तब मनुष्य में अपरिमेय शून्यता (चैतन्य) का आविर्भाव होता है। इस शून्यावस्था से ही बुद्ध, कबीर, पतंजलि, कृष्ण, ईसा मसीह, मुहम्मद, लाओ–त्से, लाहिड़ी, कृष्णमूर्ति, मंसूर, नयनार, नाथ, आवक्र, गौड़पाद, गुर्दजेङ्ग, यू.जी., आनन्दमयी माँ, गार्गी, मैत्रेयी, शंकराचार्य, रामकृष्ण, अरविन्द, रमण महर्षि, ओशो एवं भामती सदृश व्यक्ति अपने आपको अभिव्यक्त करते हैं। यह वास्तव में एक कृपा है कि जीवित मानव लाहिड़ी महाशय अस्तित्व के रहस्य और विस्मय को और भी गूढ़ बना देते हैं और स्वयं भी एक रहस्य के रूप में प्रकट होते हैं। लाहिड़ी महाशय पर पुस्तक लिखना एक बेवकूङ्गी है, जो केवल गड़बड़ी एवं भ्रम उत्पन्न करने में सक्षम है।

लोग मोहनिशा में सोए हुए हैं। क्रियायोग से उत्पन्न समझदारी की ऊर्जा उन्हें जगाती है। किन्तु जागना चाहता कौन है? जीने के लिए तो कुछ सुखद एवं लाभदायक अवधारणायें तथा निष्कष ही पर्याप्त हैं। इसलिए आध्यात्मिक मण्डी के बहुत से दूकानदारों को यह लाहिड़ी नाराज एवम् उत्तेजित करता है।

जब तर्क वितर्क समाप्त हो जाता है, बुद्धि दुविधा में पड़ जाती है, अहंकार भस्मीभूत हो जाता है, केवल तभी 'क्रिया' के परिणामस्वरूप पूर्ण चैतन्य का उदय होता है। इसलिए यदि आप यह जानना चाहते हैं कि लाहिड़ी महाशय कौन थे तो इसके लिए आध्यात्मिक मंडी के किसी धूर्त द्वारा उनके ऊपर लिखी गई किसी पुस्तक को न पढ़ें। इसके बजाय अपने सम्बन्ध में अब तक आप जो मानते रहे हैं उस मिथक को मिटाने के लिए अन्तर्मुखी यात्रा तत्काल आरंभ कर दें।

ॐ क्रिया ॐ